प्रश्नः

''ज़्या एकता की कोई सीमा है?''

उज़रः

''देखो, यह ज़्या ही भली और मनोहर बात है कि भाई लोग आपस में मिले रहें!'' (भजन संहिता 133:1)। ''भले लोग'' (देखिए लूका 2:14) कलहप्रिय नहीं होते। वे खेलकूद के मुकाबले की तरह ''लड़ते'' (यू.: *athleo;* 2 तीमुथियुस 2:5) हैं, परन्तु ''झगड़ालू'' (यू.: *machomal;* 2 तीमुथियुस 2:24) बनने की कोशिश नहीं करते अर्थात वे विवाद करने वाले नहीं होते। झगड़े की आत्मा इतनी बुरी है तथा एकता इतनी आनन्ददायक है कि कुछ लोग इकट्ठे होने के लिए शिक्षा की सारी रुकावटों को दूर कर देना चाहते हैं।

कोई शिक्षा नहीं?

कुछ धार्मिक शिक्षाओं या फिलॉस्फियों में एक शिक्षा यह है कि शिक्षा चाहे कोई भी हो उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। एक बड़ी सी छतरी के नीचे के ईश्वरवादियों, बहुईश्वरवादियों, और नास्तिकों सब को इकट्ठे कर लिया जाता है। ऐसी फिलॉस्फी में, बुद्ध धर्म की शिक्षा को इस्लाम की शिक्षा की तरह ही माना जाता है, जबकि नये नियम की मसीहियत की नज़र में दोनों एक ही हैं। ऐसी फिलॉस्फियों को मानने वाले लोगों का दावा है कि जो कोई यह सोचता है कि केवल मसीहियत ही सच्चा धर्म है, वह असहनशील कट्टर धार्मिक है।

केवल यीशु की ईश्वरीयता?

तो भी ऐसे लोग हैं जिनका यह मानना है कि यीशु का धर्म सबसे अलग है और बिना उसके द्वारा कोई पिता के पास नहीं आता (यूहन्ना 14:6)। यह एक अलग छतरी है जब तक इसमें मसीह के परमेश्वर होने की शिक्षा शामिल की जाती है, इसमें दूसरी बहुत सी शिक्षाओं को आसरा मिल सकता है। बाइबल में विश्वास करने वाले कुछ लोगों का कहना है, ''यीशु को अपना प्रभु मानने वाला हर व्यज़्ति मेरा भाई है और हमारी संगति उसके साथ है।'' ऐसे लोगों द्वारा दिखाई गई असहनशीलता केवल ऐसे व्यज़्ति के विपरीत है जो इस शिक्षा को मानता है कि

मसीह को परमेश्वर मानने के साथ-साथ किसी दूसरे को मानना भी आवश्यक है।

गलती करने वाले प्रचारक?

गलत शिक्षा देने वाले कुछ प्रचारकों के साथ एकता रखने की इच्छा के कारण मरकुस 9:38-40 का दुरुपयोग हुआ है:

> तब यूहन्ना ने उससे कहा, हे गुरु, हमने एक मनुष्य को तेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालते हुए देखा है, और हम उसे मना करने लगे, ज़्योंकि वह हमारे पीछे नहीं हो लेता था। यीशु ने कहा उसको मत मना करो; ज़्योंकि ऐसा कोई नहीं जो मेरे नाम से सामर्थ का काम करे और जल्दी से मुझे बुरा कह सके। *ज़्योंकि जो हमारे विरोध में नहीं वह हमारी ओर है।*

ज़्या एकता के बहुमूल्य नाम पर इस पद से यह निष्कर्ष निकालना कि साज़्प्रदायिक कलीसियाओं के पास्टरों और सुसमाचार का गलत प्रचार करने वालों को मान्यता दे देनी सही है। मरकुस 9 अध्याय के टोन्हें को यूहन्ना द्वारा निजी तौर पर न जानने का अर्थ यह नहीं है कि वह एक झूठा शिक्षक था। इसके विपरीत यीशु ने उस आदमी को मंजूरी दे दी, और हम जानते हैं कि यीशु किसी झूठे शिक्षक का अनुमोदन नहीं करेगा (मज़ी 7:15-23)। वह आदमी वास्तव में यीशु के नाम में दुष्टात्माओं को निकालता था, जो ऐसा काम था जिसे कोई धोखेबाज या कपटी नहीं कर सकता था (देखिए प्रेरितों 19:13-16)। यह कहना कि इस घटना में यीशु ने साज़्प्रदायिक कलीसियाओं के पास और झूठी शिक्षा देने वाले प्रचारकों को अनुमति दे दी: मज़ी 15:13, 14; यूहन्ना 8:32; रोमियों 16:17; 1 थिस्सलुनीकियों 5:21, 22; गलतियों 1:6-9; इफिसियों 4:1-7; 2 पतरस 2:1, 2; 1 यूहन्ना 4:1; 2 यूहन्ना 9-11; 2 तीमुथियुस 4:1-5 जैसे बहुत से दूसरे पदों को नकारना है।

प्रेरितों की शिक्षा

मसीह यीशु के ईश्वरीय होने से आगे किसी शिक्षा की आवश्यकता का होना यूहन्ना 12:48 में दिखाया गया है, ''जो मुझे तुच्छ जानता है ओर मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उस को दोषी ठहरानेवाला तो एक है: अर्थात जो वचन मैं ने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा।'' जो वचन यीशु ने कहा उसमें प्रेरितों को दी गई बांधने और खोलने की शज़्ति भी है (मज़ी 18:18)। एक प्रेरित को स्वीकार करने का अर्थ मसीह को और उसके पिता को स्वीकार करना था (मज़ी 10:40)। एक प्रेरित को नकारने का अर्थ मसीह को और उसके पिता को नकारना था (लूका 10:16)। प्रारज़्भिक मसीही न केवल मसीह को परमेश्वर ही मानते थे बल्कि प्रेरितों की शिक्षा को भी मानते थे (प्रेरितों 2:36, 42)।

मसीह के प्रति वफ़ादारी और मसीह में एकता के लिए ''यीशु प्रभु है'' कहने से अधिक बात है। यीशु ने स्वयं कहा, ''जब तुम मेरा कहना नहीं मानते, तो ज़्यों मुझे हे प्रभु,

हे प्रभु, कहते हो ?'' (लूका 6:46)। मत्ती 19:28 में उसने कहा कि उसके बारह प्रेरित नई सृष्टि के समय (पिन्तेकुस्त के दिन, 30 ईस्वी से जगत के अन्त तक) अधिकार के बारह सिंहासनों पर बैठेंगे। इसके अलावा उसने उनके साथ न केवल उनके जीवनकाल में बल्कि जगत के अन्त तक भी रहने की प्रतिज्ञा की (मत्ती 28:20)। उन्होंने जो भी शिक्षा दी वह सत्य है और जो शिक्षा उनके द्वारा नहीं है वह गलत है (1 यूहन्ना 4:6)। इसलिए उद्धार की योजना, कलीसिया, उसके नाम, आराधना के ढंग, या जीने के ढंग से समझौता करने वाली किसी भी शिक्षा को जो प्रेरितों की शिक्षा के अनुसार न हो मसीह के प्रति वफ़ादारी नहीं कहा जा सकता।

सारांश

नये नियम की जो भी शिक्षा है वह सच्चा चेला होने के लिए अनिवार्य है। परमेश्वर द्वारा दी गई मसीह में एकता फिर तो इस आधार पर नहीं कि कोई एक होने की कितनी इच्छा रखता है, न ही इस आधार पर है कि कोई सब लोगों से कितना प्रेम रखता है, बल्कि नये नियम की सज़ाईस पवित्र पुस्तकों के आधार पर है।

पहले से ठहराए होने के सम्बन्ध में बाइबल का क्या मत है? (रोमियों 9:6-16; इफिसियों 1:4, 5, 11)

परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता (यूनानी मूल भाषा से, ''मुंह देखकर न्याय नहीं करता''; प्रेरितों 10:34, 35; देखिए रोमियों 2:11) और हर एक को अपने ही कामों का लेखा देना पड़ेगा (रोमियों 14:12)। इसलिए बाइबल के अनुसार पहले से ठहराए होना पहले से नियुक्त होने के लिए *व्यक्ति* को नहीं बल्कि उसके *चरित्र* को ध्यान में रखने के लिए होना चाहिए।

रोमियों 9 अध्याय देखें। इसकी आयत 6 हमें बताती है कि असली इस्राएली शारीरिक रूप से यहूदी नहीं (मत्ती 3:9) बल्कि वे हैं जिनके मन सही हैं (रोमियों 2:29) और जो परमेश्वर की इच्छा को पूरा करते हैं (देखिए रोमियों 2:13; याकूब 1:22)। 7 से 9 आयतों में पौलुस ने कहा कि अब्राहम की संतान वे हैं जो विश्वास के कदमों में चलते हैं (रोमियों 4:12), जिसमें इसहाक तो चला, लेकिन इस्माएल नहीं। आयत 11 में हम देखते हैं कि परमेश्वर *पहले से जानता* था परन्तु उसने *पहले से ठहराया* नहीं कि याकूब और एसाव का चरित्र कैसा होगा। उन्होंने अपना चरित्र स्वयं बनाया और परमेश्वर ने (अपने पूर्व ज्ञान के आधार पर) जीवन में उनकी स्थितियों के लिए योजनाएं बनाईं।

आयत 13 यह सुझाव नहीं देती कि परमेश्वर किसी से घृणा करता है (देखिए यूहन्ना 3:16)। बल्कि ''घृणा'' शब्द का इस्तेमाल किसी के अपने ही कामों से परमेश्वर के समर्थन को खो देना है। परमेश्वर सबको पहले से जानता है कि उनमें से कौन लोग आदर का बर्तन होंगे। परन्तु परमेश्वर यह फैसला नहीं करता कि आदर का बर्तन कौन होगा।

ज़्योंकि यह निर्णय वह हर व्यक्ति पर छोड़ता है। ''यदि कोई अपने आप को इन से शुद्ध करेगा, तो वह आदर का बर्तन, और पवित्र ठहरेगा; और स्वामी के काम आएगा, और हर भले काम के लिए तैयार होगा'' (2 तीमुथियुस 2:21)। जब कोई स्वार्थ को और परमेश्वर की आज्ञा न मानने को चुनता है, तो परमेश्वर समय से पहले ही जानता है कि उसका ज़्या होगा, और उसने उससे भी सेवा लेने के लिए जगह रख छोड़ी होती है, जैसे उद्देश्य को पूरा करने के लिए उसे दुष्ट फिरौन ने सेवा दी थी (देखिए आयत 17)।

उद्धार परमेश्वर द्वारा पहले से ठहराए होने के आधार पर नहीं बल्कि मनुष्य के मसीह को जानने के आधार पर होता है (यूहन्ना 6:44, 45; रोमियों 10:1, 2)। कोई दुष्ट व्यक्ति पैने पर चाहे कितनी भी लात मार ले (देखिए प्रेरितों 26:14), परन्तु वह परमेश्वर के अनन्त आदेशों को नहीं बदल सकता। परमेश्वर उन पर करुणा करेगा जो उसकी आज्ञा मानते हैं और आज्ञा न मानने वालों को दण्ड देगा (भजन संहिता 103:17, 18; रोमियों 2:4-11)। परमेश्वर को प्रसन्न करने की इच्छा रखने वाले व्यक्ति के लिए उसकी योजना के अनुसार इच्छा करना (प्रकाशितवाक्य 22:17) और चलना (1 कुरिन्थियों 9:24-26) आवश्यक है।

इफिसियों 1:4 दिखाता है कि परमेश्वर ने जगत के अस्तित्व से भी पहले यह निर्णय ले लिया था कि वह जिन लोगों को मसीह में पहचानेगा वे पवित्र और निर्दोष और उसके प्रिय होंगे। उसने पहले से ठहरा दिया कि उसके लोगों की पहचान के लिए कौन सी विशेषताएं होनी आवश्यक हैं, परन्तु अपने आप को पवित्र (1 पतरस 1:16), निष्कलंक (फिलिप्पियों 2:14, 15), और प्रिय (1 थिस्सलुनीकियों 4:9, 10) बनाना हर मनुष्य की अपनी इच्छा पर है।

परमेश्वर ने ठहराया कि मसीह को ग्रहण करने वाले व्यक्ति को परमेश्वर के बालकों के रूप में ग्रहण किया जाएगा (इफिसियों 1:5)। पवित्र, निर्दोष और प्रिय बनकर जो लोग मसीह में हैं और जिन्हें बालकों के रूप में गोद ले लिया गया है उन्हें मीरास मिलेगी (इफिसियों 1:11)। परन्तु वह मीरास सशर्त है, ज़्योंकि उन्हीं इफिसियों को जिन्हें यह प्रतिज्ञा दी गई थी बाद में अपने पापों से मुड़कर भले कामों की ओर न लौटने पर त्यागे जाने की चेतावनी दी गई (प्रकाशितवाक्य 2:5)।